इकाई 2 पर्यावरण अध्ययन के शैक्षणिक उद्देश्य

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 शैक्षणिक उद्देश्यों का निरूपण

- 2.3.1 संज्ञानात्मक उद्देश्य
- 2.3.2 मनोगत्यात्मक उद्देश्य
- 2.3.3 भावात्मक उद्देश्य

2.4 पर्यावरण अध्ययन के प्राथमिक स्तर की समाप्ति पर प्राप्य उद्देश्य

2.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.)

- 2.5.1 न्यूनतम अधिगम स्तर की मूलभूत विशेषताएँ
- 2.5.2 सावधानी की दृष्टि से दो शब्द

2.6 सारांश

2.7 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की संकल्पना और शिक्षण की आवश्यकता के बारे में पढ़ा है। यह इकाई पर्यावरण अध्ययन के शैक्षणिक उद्देश्यों के निरूपण से संबंधित है।

शिक्षा का उद्देश्य बालक या शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास है, इसलिये हमें शैक्षिक उद्देश्यों का निरूपण करते समय बच्चे के व्यक्तित्व के सभी पक्षों अर्थात् मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक को ध्यान में रखना होता है। यह बात पर्यावरण अध्ययन पर भी लागू होती है।

पर्यावरण अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस इकाई में निम्नलिखित पहलुओं पर चर्चा की गई है :

i) प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के शैक्षणिक उद्देश्यों का निरूपण

ii) शैक्षणिक उद्देश्यों के तीन प्रमुख क्षेत्र और उनसे संबंधित दक्षताएँ/विनिर्देशन

iii) नमूने के तौर पर कुछ इकाइयों के महत्त्वपूर्ण अधिगम प्रतिफल।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के उद्देश्यों का अभिनिर्धारण कर सकेंगे;
- पर्यावरण से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों के आधार पर शैक्षणिक उद्देश्यों को लिखने के कौशल विकसित कर सकेंगे;
- इकाई-वार महत्त्वपूर्ण अधिगम प्रतिफलों का निरूपण कर सकेंगे।

2.3 शैक्षणिक उद्देश्यों का निरूपण

हम सभी जानते हैं कि अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है। विचारों और बोध का विकास कौशल और अभिवृत्ति के विकास के साथ-साथ होता है। अधिगम के इन पक्षों के बीच मूलभूत पारस्परिक निर्भरता है। बोध सहित अधिगम से अभिप्राय है शिक्षार्थियों में स्वयं के चिन्तन और क्रिया के द्वारा विचारों का विकास और पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में इसका अर्थ है कौशलों का उपयोग और कौशलों के उपयोग द्वारा नई स्थितियों के साथ निपटना। कौशल और संकल्पना की तुलना में व्यवहार अभिवृत्तियों के अधिक सामान्यीकृत घटक होने के कारण उनके विकास के लिये व्यापक एवं विस्तृत अनुभवों की आवश्यकता होती है क्योंकि अभिवृत्ति शिक्षण की कोई प्रत्यक्ष विधि नहीं होती है। समझ, संकल्पना व विचार, कौशल और अभिवृत्ति की यहां पर अलग-अलग चर्चा की जा रही है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि ये मूलत: एक-दूसरे से जुड़े हुए नहीं हैं। हम केवल समग्र के विभिन्न तथ्यों पर विचार कर रहे हैं। उद्देश्यों का निरूपण करते समय हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिये।

उद्देश्य क्या होता है? उद्देश्य केवल एक ऐसा स्पष्ट विवरण है जिसमें ऐसे व्यवहार का अभिनिर्धारण किया जाता है जिसे शिक्षक महत्त्वपूर्ण मानता है। इसमें प्राय: एक या दो वाक्य होते हैं जिनमें यह बताया जाता है कि वांछित लक्ष्य पर पहुंचने पर बालक किस प्रकार का व्यवहार करेगा। व्यवहारपरक उद्देश्यों की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उनमें वे ऐसे व्यवहार पर आधारित हों जिन्हें शिक्षक वास्तविक रूप में देख सकें। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि उद्देश्यों को केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें अधिगम के अन्य क्षेत्रों को भी समाहित करना चाहिए।

व्यवहारपरक उद्देश्यों के उपयोग के पक्ष और विपक्ष में तर्क

1960 और 1970 के दशकों में शिक्षाशास्त्रियों के बीच व्यवहारपरक उद्देश्यों के उपयोग के पक्ष और विपक्ष में अच्छी खासी बहस हुई थी। कुछ एक का विश्वास था कि इनके उपयोग के कारण शैक्षिक लक्ष्य संकुचित हो जाते हैं। उन्होंने ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जिनमें शिक्षकों ने अपना अधिकांश समय उद्देश्य लिखने में तो लगाया, परन्तु शिक्षण के दौरान उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने इस प्रकार के उद्देश्यों को इसलिए नकार दिया कि उनके विचार में इनसे शिक्षण को ऐसी नीरस पद्धति को प्रोत्साहन मिलता था जो मुख्यत: व्यवहार रूपान्तरण पर आधारित होती है। कुछ अन्य लोगों ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि भावात्मक तथा सामाजिक अधिगम के कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण प्रकारों को व्यवहारपरक शब्दावली में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। आलोचना का एक बिंदु यह भी था कि इस प्रकार के उद्देश्यों की एकमात्र विशेषता यही होती है कि उनमें इंगित व्यवहार को लिखने का कारण मात्र उनकी प्रेक्षणीयता होती है अन्यथा उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उद्देश्यों को गलत ढंग से लिखा जा सकता है अथवा उनका गलत ढंग से उपयोग किया जा सकता है। तथापि, यदि उद्देश्यों का सही उपयोग किया जाये तो इससे शिक्षकों को यह पता चल सकता है कि कौन-सा लक्ष्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इनसे शिक्षक स्पष्ट रूप से यह बता भी सकते हैं कि शिक्षार्थी ने कब लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है।

पर्यावरण अध्ययन के एक शिक्षक की डायरी से लिए गए निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें : "एक सुन्दर सी घाटी में स्थित हमारे छोटे से स्कूल का उद्देश्य है संपूर्ण बालक का विकास करना। हम चाहते हैं कि वह मानसिक तौर पर स्वस्थ, शारीरिक तौर पर सक्षम, सामाजिक तौर पर संवेदनशील और विश्वसनीय रूप से सृजनशील हों।" पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के लिए दीर्घकालीन सामान्य आधार की दृष्टि से इस कथन में कोई आपत्ति नहीं है परन्तु बहुत से शिक्षक अपने आपसे कभी यह प्रश्न करने का कष्ट नहीं करते कि इस लक्ष्य को बालकों के जीवन की दैनिक वास्तविकताओं की पृष्ठभूमि में रूपांतरित करने के लिए वे क्या कदम उठाएंगे। व्यवहारपरक उद्देश्य व्यापक प्रयोजनों और वास्तविकताओं के बीच की दूरी को पाटने में शिक्षक के लिए सेतु का कार्य कर सकते हैं।

किसी विषय के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी के व्यवहार में आने वाले वांछित परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक उद्देश्यों का निरूपण या अभिकल्पन किया जाता है। उद्देश्यों को निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में रखा जा सकता है :

i) संज्ञानात्मक

ii) मनोगत्यात्मक (कौशल), तथा

iii) भावात्मक

आइए इन क्षेत्रों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

2.3.1 संज्ञानात्मक उद्देश्य

संज्ञानात्मक उद्देश्य क्या हैं? इसका संबंध शिक्षार्थी की मानसिक योग्यता से होता है। इसमें अधिगम के क्षेत्र में स्मरण अथवा प्रत्यास्मरण, वर्णन, स्पष्टीकरण, तर्क, व्याख्या तथा समस्या-समाधान सम्मिलित होते हैं।

मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने संज्ञानात्मक क्षेत्र में अपेक्षित व्यवहारगत प्रतिफलों के चार स्तर निर्धारित किये हैं जो इस प्रकार हैं :

- ज्ञान
- समझ/बोध
- अनुप्रयोग
- सर्जनात्मकता

ज्ञान : इस उद्देश्य में तथ्यों, आँकड़ों, अक्षरों, शब्दों आदि का स्मरण सम्मिलित होता है। इसमें पहचान, प्रत्यास्मरण आदि मानसिक प्रक्रियाएँ निहित होती हैं।

बोध/समझ : इस उद्देश्य में विभिन्न प्रकार की विषय-वस्तु के बीच संबंधों और विभेदों पर बल दिया जाता है। इसमें शिक्षार्थियों की चिंतन प्रक्रिया में परिवर्तन समाहित होता है। इस प्रकार के विशिष्ट व्यवहार में समान उदाहरण देने की योग्यता, संबंधों की पहचान करने की योग्यता, विभेद करने की योग्यता, वर्गीकरण की योग्यता और सामान्यीकरण की योग्यता आदि सम्मिलित होते हैं।

अनुप्रयोग : इस उद्देश्य में अर्जित ज्ञान अथवा जानकारी को विभिन्न/नई स्थितियों में प्रयोग करने की योग्यता सम्मिलित होती है। इसके लिये तर्क-वितर्क, परिकल्पना निर्मित करना और अनुमान लगाने की मानसिक प्रक्रियाएँ अपेक्षित होती हैं। ये व्यवहार, समस्या-समाधान योग्यताओं से संबंधित होते हैं।

सर्जनात्मकता : इसे अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य मानना चाहिये। इसमें किसी अपरिचित अथवा नई स्थिति/समस्या का विश्लेषण करने और व्यक्ति द्वारा कुछ अनूठा विकसित करने की योग्यता सम्मिलित होती है। इसमें विभिन्न वस्तुओं के बीच दूर के संबंध को पहचानने, नवीन स्थिति की कल्पना करने तथा नए और मौलिक अभिकल्प, मॉडल/मशीन आदि विकसित करने की योग्यता भी सम्मिलित होती है। सर्जनात्मकता के गुण के कारण ही कोई नवीन तथा वांछनीय उत्पादन संभव होता है।

2.3.2 मनोगत्यात्मक उद्देश्य

इस क्षेत्र में अधिगम किसी शारीरिक कौशल में निपुणता की प्राप्ति पर निर्भर होता है।

इसमें **निदर्शनात्मक कौशल तथा विशिष्ट कार्यों का निष्पादन** सम्मिलित होते हैं, जैसे-लिखना, पढ़ना, चित्र, मानचित्र, आदि बनाना। तथापि, इस क्षेत्र के विकास की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया है जितना कि संज्ञानात्मक और भावात्मक क्षेत्रों की ओर दिया गया है। यह पर्यावरण अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है।

2.3.3 भावात्मक उद्देश्य

इन उद्देश्यों का लक्ष्य, **रुचियों, अभिवृत्तियों, महत्त्व बोध, मूल्यों आदि का विकास है**। इनमें से रुचियाँ सबसे अधिक अस्थायी और मूल्य सबसे अधिक स्थायी होते हैं। अभिवृत्तियेां तथा महत्त्व बोध की स्थिति इनके बीच की होती है। परन्तु इन चारों का संबंध व्यक्ति की भावनाओं से होता है। उदाहरणत: विद्यालय परिवार की स्वच्छता और रखरखाव में आपकी रुचि अस्थायी हो सकती है। परन्तु यदि आपके सभी कार्य, आदतें, अभिप्रेरण और सरोकार पर्यावरण की स्वच्छता और सुधार से संबंधित हों तो यह स्थायी व्यवहार हो सकता है।

अधिगम स्थिति में शिक्षक का लक्ष्य शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का विकास होना चाहिये। इसीलिये **प्रभावी परिणाम प्राप्त करने के लिये हमेशा बाल केंद्रित उपागम** सुझाया जाता है। उपयुक्त क्रिया शब्दों का प्रयोग करते हुए **व्यवहारपरक शब्दावली में लिखे गए शैक्षणिक उद्देश्य** व्यवहारपरक उद्देश्य कहलाते हैं। व्यवहारपरक उद्देश्य परीक्षणीय होते हैं परन्तु इन पर आवश्यकता से अधिक बल नहीं देना चाहिए। इन उद्देश्यों का उपयोग अनुभव के तौर पर करना चाहिए क्योंकि इनसे पता चलता है कि शिक्षार्थी को क्या सीखना है और शिक्षक को क्या मूल्यांकन करना है। नीचे प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत शैक्षणिक उद्देश्यों के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं :

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र	**अपेक्षित व्यवहारपरक प्रतिफलों के उदाहरण**
i) ज्ञान पहचान अभिनिर्धारण प्रत्यास्मरण	• शिक्षार्थी अपने आस-पड़ोस में स्थित किसी पूजा स्थल के नाम का प्रत्यास्मरण करता है।
ii) समझ/बोध संबंध समझना विभेदन वर्गीकरण व्याख्या सामान्यीकरण	• शिक्षार्थी बताई गई वस्तुओं का सजीव अथवा निर्जीव पदार्थों के अंतर्गत वर्गीकरण करता है। शिक्षार्थी स्पष्ट करता है कि हम सर्दी के मौसम में गर्म कपड़े क्यों पहनते हैं।
iii) अनुप्रयोग इसमें नियमों, सिद्धांतों , सकल्पनाओं को नवीन एवं मूर्त स्थितियों में प्रयुक्त करने और पूर्वकथन करने की योग्यता सम्मिलित है।	• शिक्षार्थी पूर्वकथन करता है कि जंगलों की कटाई से हमारा जीवन खतरे में पड़ सकता है।
2. मनोगत्यात्मक कौशल	
शुद्धता परिशुद्धता गति समन्वय	i) शिक्षार्थी पुरूष शरीर का चिह्नित आरेख बनाता है। ii) शिक्षार्थी दिए गए किसी रेखाचित्र में विभिन्न भागों के नाम लिखता है।
3. भावात्मक क्षेत्र	
महत्त्व बोध सराहना	शिक्षार्थी किसी क्षेत्र के विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व का अनुभव करता है, जैसाकि आसाम और अरूणाचल प्रदेश में तेल संसाधन।

पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों से जानकारी और आँकड़े एकत्र करवाए, उनका वर्गीकरण और विश्लेषण करवाए और निष्कर्ष निकलवाए, विभिन्न घटकों के बीच संबंधों का पता लगवाए, कारणों सहित व्याख्या करवाए। इस प्रक्रिया में बच्चों में मनोगत्यात्मक कौशलों का भी विकास होगा जैसे कि मॉडल बनाना, मानचित्र बनाना, मानचित्र में स्थानों को ढूँढ़ना आदि। पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण से बालकों को पर्यावरण हितैषी जीवन-शैली के लिए वांछनीय अभिवृत्तियों, मूल्यों, व्यवहार-प्रतिमान आदि का विकास करने में भी सहायता मिलती है।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1. अधिगम के तीन प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए

.....

.....

.....

.....

.....

2. संज्ञानात्मक क्षेत्र के निम्नलिखित स्तरों को उपयुक्त क्रम में लिखिए: सर्जनात्मकता, बोध, ज्ञान, अनुप्रयोग

.....

.....

.....

.....

.....

3. किस अधिगम क्षेत्र का मूल्यांकन कठिन है? क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 पर्यावरण अध्ययन के प्राथमिक स्तर की समाप्ति पर प्राप्य उद्देश्य

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या का निर्माण दस प्रमुख दक्षताओं को केंद्र में रखकर किया गया है। आशा की जाती है कि प्राथमिक स्तर पर सभी बच्चों में ये दक्षताएँ विकसित हो जायेंगी। मुख्य दक्षताओं की सूची नीचे दी गई है –

i) सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण के संदर्भ में शिक्षार्थी की कुशलक्षेम के बारे में जागरूकता का विकास।

ii) अपने सामाजिक-नगरीय पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण और उनके बारे में समझ का विकास।

iii) विभिन्न कार्यों में लगे हुए लोगों के बारे में जानना और कार्य जगत के महत्त्व को महसूस करना।

iv) मानव और उसके पर्यावरण के बीच संबंध को समझना और उसकी व्याख्या करना।

v) अतीत के परिप्रेक्ष्य में मानव के भूत और वर्तमान के बीच के संबंध को समझना।

vi) आसानी से प्रेक्षणीय सामान्य और सरल समाज - आर्थिक स्थितियों और समस्याओं का अनुमान लगाना, उनका विश्लेषण करना और सम्भावित समाधान खोजना।

vii) मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले तत्वों और अच्छे स्वास्थ्य की मूलभूत अपेक्षाओं को समझना।

viii) अपने पर्यावरण के सजीव पदार्थों के बारे में जानकारी प्राप्त करने, उनका वर्गीकरण करने और एकत्रित जानकारी के आधार पर सरल निष्कर्ष निकालने के कौशलों का विकास करना।

ix) निर्जीव पदार्थों की सामान्य विशेषताओं का प्रेक्षण व परीक्षण करना।

x) धरती और आकाश में घटने वाली साधारण घटनाओं का प्रेक्षण करना, उनके कारण जानना और निष्कर्ष निकालना।

इन दक्षताओं को कक्षावार विकसित करने की दृष्टि से इनको उप-दक्षताओं में विभाजित किया गया है। ये उप-दक्षताएँ विशिष्ट विषय-वस्तु क्षेत्रों से संबंधित है।

2.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986 (1992 में संशोधित) की महत्त्वपूर्ण सिफारिशों में से एक सिफारिश का संबंध शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सभी बच्चों द्वारा प्राप्त की जाने वाली अधिगम की स्थिति से था। शिक्षा नीति में कहा गया था कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर के लिये न्यूनतम अधिगम स्तर निश्चित किए जाएँगे।

पूरे देश में शिक्षा स्तर में एकरूपता लाने के लिये सभी बच्चों को तुलनीय स्तर की शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। न्यूनतम अधिगम स्तर की पहचान के पीछे, नीति निरूपण का मुख्य बल साम्यता और गुणवत्ता पर है।

अधिगम के स्तर ऐसे होने चाहिए जिन्हें प्रत्येक बच्चा प्राप्त कर सकता हो। न्यूनतम अधिगम स्तरों का निरूपण देश के प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध अधिगम वातावरण की विविधता और बच्चों की आयु, अभिरुचियों और योग्यताओं को ध्यान में रखकर किया गया था।

इसके अन्य निहितार्थ निम्नलिखित हैं :

- पाठ्यचर्या के भार को और अप्रासंगिक तथ्यों को रटने के भार को कम करना;
- शिक्षकों को इस योग्य बनाना कि वे शिक्षण-अधिगम को रोचक, शिक्षार्थी केंद्रित और क्रिया आधारित बनाते हुए पाठ्य पुस्तकों में दी गई जानकारी को दैनिक जीवन की वास्तविकताओं के साथ जोड़ सकें;
- बच्चों में मूलभूत कौशलों एवं दक्षताओं का इस स्तर तक विकास करना कि वे स्थिर बने रह सकें;
- कौशलों एवं दक्षताओं में निपुणता प्राप्त करना ताकि वे स्थायी बनी रहें।
- कौशलों एवं दक्षताओं में निपुणता केवल मेधावी छात्रों तक सीमित न होकर प्रथम पीढ़ी के बहुसंख्यक शिक्षार्थियों सहित सभी बच्चों के लिये हो।

2.5.1 न्यूनतम अधिगम स्तर की मूलभूत विशेषताएँ

न्यूनंतम अधिगम स्तर की कुछ मूलभूत विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- इन्हें शिक्षार्थियों की उपलब्धि और शिक्षकों के निष्पादन लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयोजन संपन्न

करना चाहिए।

- ये प्रकार्यात्मक तथा बच्चे के लिए प्रासंगिक हों।
- इनका उल्लेख इस प्रकार हो कि शिक्षक उन्हें आसानी से समझ सकें और इनके आधार पर मूल्यांकन कर सकें।
- सभी बच्चों को इन में निपुणता प्राप्त करनी चाहिए।

अत: आप देख सकते हैं कि न्यूनतम अधिगम स्तर निरूपित करने का प्रयोजन यह था कि ये सभी बच्चों द्वारा प्राप्त किए जा सकने वाले अधिगम प्रतिफलों के अनुरूप हों।

2.5.2 सावधानी की दृष्टि से दो शब्द

न्यूनतम अधिगम स्तर के निरूपण और सभी बच्चों की इनमें निपुणता होने के क्या निहितार्थ हैं?

आप इस बात से परिचित हैं कि प्राथमिक विद्यालयों की स्थितियों में बहुत भिन्नता एवं विविधता है। ये विविधताएँ विभिन्न क्षेत्रों में भी होती हैं और एक ही स्थान पर भी होती हैं। इसलिये क्रियान्वयन में लचीलापन होना चाहिये। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम इन न्यूनतम अधिगम स्तरों की प्राप्ति में बच्चों की सहायता कर सकें। अधिगम के इन स्तरों में प्रत्येक शिक्षार्थी की सहायता करने के लिये प्रभावी निवेशों की आवश्यकता होगी। शिक्षण-अधिगम स्थितियों में न्यूनतम अधिगम स्तरों के अनुप्रयोग पर केवल अत्यधिक बल देना अपेक्षित नहीं हैं। व्यवहारपरक उद्देश्यों की भांति इन्हें भी संदर्भ बिन्दु के रूप में ध्यान में रखना चाहिये। न्यूनतम अधिगम स्तरों को प्राप्त करने में बच्चे की सहायता करने के फलस्वरूप न केवल संसाधनों का अपव्यय कम होगा बल्कि शिक्षा अधूरी छोड़ कर जाने वाले बच्चों की संख्या भी कम हो जाएगी।

ऊपर की गई चर्चा के संदर्भ में आइए शिक्षक की भूमिका का निर्धारण करें :

- अपने शिक्षण के लक्ष्यों का इस प्रकार अभिनिर्धारण करे कि वे प्रत्येक बच्चे की पहुंच में हो;
- अपने शिक्षण-अधिगम क्रियाकलापों का निदेशन विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करे;
- अपने शिक्षण में सुधार लाए, प्रक्रिया में आवश्यक निवेश करे;
- बच्चों ने पूर्व परिभाषित अधिगम स्तर प्राप्त किये हैं या नहीं, यह जानने के लिये शिक्षार्थियों का मूल्यांकन अधिक परिशुद्धता से करे;
- ऐसे बच्चों की पहचान करें जो दैनिक स्थितियों से निपटने के लिये आवश्यक मूल अधिगम प्रतिफलों में पारंगत हो गये हैं। इस स्तर तक आने में अन्य बच्चों की सहायता करे;
- बच्चों की उपलब्धियों के बारे में अभिभावकों के साथ और अधिक प्रभावी ढ़ंग से संप्रेषण करे, उनसे सहायता एवं सहभागिता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें।

2.6 सारांश

इस इकाई में शैक्षणिक उद्देश्यों के निरूपण की आवश्यकता पर चर्चा की गई है। शैक्षणिक उद्देश्य वास्तव में शिक्षा के व्यवहार में वे वांछित परिवर्तन हैं जिन्हें अधिगम के किसी क्षेत्र विशेष की समाप्ति पर प्राप्त कर लेने की अपेक्षा की जाती है। क्योंकि, शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का विकास अपेक्षित है अत: इन उद्देश्यों का निरूपण विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित दक्षताओं के संदर्भ में किया गया है।

- संज्ञानात्मक क्षेत्र (मानसिक/बौद्धिक पक्ष)
- मनोगत्यात्मक क्षेत्र (हस्त प्रयोगी कौशल)
- भावात्मक क्षेत्र (समाज-संवेगात्मक पक्ष)

प्रत्येक क्षेत्र का आगे और विभिन्न क्षेत्रों में वर्गीकरण किया जा सकता - प्रत्येक क्षेत्र की अपनी

दक्षताएं होती हैं। संज्ञानात्मक क्षेत्र में उद्देश्य चार स्तरों पर हो सकते हैं - ये हैं ज्ञान, समझ/बोध, अनुप्रयोग और सर्जनात्मकता। मनोगत्यात्मक क्षेत्र में कौशल और निष्पादनीय कार्य सम्मिलित होते हैं। भावात्मक क्षेत्र में अभिवृत्तियाँ, रुचियाँ, महत्त्व-बोध मूल्य आदि सम्मिलित होते हैं।

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के आयोजन में व्यवहारपरक उद्देश्य सहायक सिद्ध होते हैं। यदि उपयुक्त तरीके से इन्हें विकसित किया जाये तो ये शिक्षक के रूप में आपके लिए अपने मूल्यों का परीक्षण करने में, ऐसे उद्देश्यों का चयन करने में जिन्हें आप महत्त्वपूर्ण समझते हों, और उच्च विचारों को बच्चों की दृष्टि से व्यावहारिक अपेक्षाओं में रूपांतरित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

उद्देश्यों को कम औपचारिक ढ़ंग से ऐसी शब्दावली में लिखा जा सकता है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि शिक्षक बच्चों से क्या प्राप्त करने की अपेक्षा करता है। तथापि, केवल उद्देश्य लिखना ही पर्याप्त नहीं। वर्ष के दौरान यह जाँच भी करते रहना चाहिये कि क्या पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन उद्देश्यों के अनुरूप हो रहा है और क्या शिक्षण की प्रभाविता का निर्धारण करने के लिए बच्चों के व्यवहार का मूल्यांकन किया जा रहा है।

2.7 अभ्यासान्तर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. i) संज्ञानात्मक, ii) मनोगत्यात्मक, और iii) भावात्मक क्षेत्र
2. i) ज्ञान, ii) बोध, iii) अनुप्रयोग, और iv) सर्जनात्मकता
3. भावात्मक क्षेत्र क्योंकि इसका संबंध व्यक्ति की भावनाओं से होता है और इसका उद्देश्य कुछ अभिवृत्तियों, अभिरुचियों और मूल्यों का विकास करना होता है।